MPSE- 004

Social and political thoughts in modern India

आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक विचार

Important question and repeated topics

(Part-7)

TOPIC 1

Differences Between Moderates and Extremists in the Indian National Movement.

Goals

Moderates: Sought gradual reforms and greater participation of Indians in the British colonial administration. They aimed for self-governance under British rule.

लक्ष्य (मध्यमपंथी): क्रमिक सुधार और भारतीयों की ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन में अधिक भागीदारी की मांग की। उनका लक्ष्य ब्रिटिश शासन के अधीन स्वशासन प्राप्त करना था।

Extremists: Desired complete independence (Purna Swaraj) from British rule and were ready to adopt more radical approaches to achieve this.

लक्ष्य (उग्रवादी): ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज) की इच्छा रखते थे और इसे प्राप्त करने के लिए अधिक उग्र दृष्टिकोण अपनाने के लिए तैयार थे।

Methods

Scholarly Minds

Moderates: Preferred constitutional methods like petitions, prayers, meetings, and dialogues with British officials.

तरीके (मध्यमपंथी): संवैधानिक तरीकों को प्राथमिकता देते थे, जैसे याचिकाएं, प्रार्थनाएं, बैठकें, और ब्रिटिश अधिकारियों के साथ संवाद।

Extremists: Advocated for direct action including boycotts of British goods, swadeshi (promoting Indian-made goods), and passive resistance.

तरीके (उग्रवादी): प्रत्यक्ष कार्रवाई की वकालत करते थे, जिसमें ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी (भारतीय निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देना), और निष्क्रिय प्रतिरोध शामिल था।

Leadership

Moderates: Key leaders included Gopal Krishna Gokhale, Dadabhai Naoroji, and Pherozeshah Mehta.

नेतृत्व (मध्यमपंथी): प्रमुख नेताओं में गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, और फिरोजशाह मेहता शामिल थे।

Extremists: Key leaders included Bal Gangadhar Tilak, Bipin Chandra Pal, and Lala Lajpat Rai.

नेतृत्व (उग्रवादी): प्रमुख नेताओं में बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, और लाला लाजपत राय शामिल थे।

Attitude Towards British Rule

Moderates: Believed in the loyalty to the British Crown and saw British rule as beneficial if reformed.

ब्रिटिश शासन के प्रति रवैया (मध्यमपंथी): ब्रिटिश राज के प्रति निष्ठा में विश्वास करते थे और अगर सुधार किया जाए तो ब्रिटिश शासन को लाभदायक मानते थे।

Scholarly Minds

Extremists: Were highly critical of British rule and believed that only complete independence could address India's issues.

ब्रिटिश शासन के प्रति रवैया (उग्रवादी): ब्रिटिश शासन के प्रति अत्यधिक आलोचनात्मक थे और मानते थे कि केवल पूर्ण स्वतंत्रता ही भारत की समस्याओं का समाधान कर सकती है।

Relationship

Moderates and Extremists: Initially worked together within the Indian National Congress but eventually split due to ideological differences, notably during the Surat Split of 1907.

मध्यमपंथी और उग्रवादी: प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक साथ काम किया लेकिन अंततः वैचारिक मतभेदों के कारण विभाजित हो गए, विशेष रूप से 1907 के सूरत विभाजन के दौरान।

TOPIC 2

Savarkar's Views on Nation and the State

Concept of Hindutva

Nation Defined by Culture and Civilization: Savarkar's seminal work "Hindutva: Who is a Hindu?" defines the Indian nation (Rashtra) primarily based on a shared cultural and civilizational identity, which he termed Hindutva.

हिंदुत्व की अवधारणा: सावरकर की प्रमुख रचना "हिंदुत्व: हू इज़ अ हिंदू?" भारतीय राष्ट्र (राष्ट्र) को मुख्य रूप से एक साझा सांस्कृतिक और सभ्यतागत पहचान के आधार पर परिभाषित करती है, जिसे उन्होंने हिंदुत्व कहा।

Criteria for Nationhood

Scholarly Minds

Common Ancestry and Heritage: According to Savarkar, the essence of the nation lies in common ancestry, cultural heritage, and historical continuity.

राष्ट्रवाद के मापदंड: सावरकर के अनुसार, राष्ट्र की आत्मा समान पूर्वजों, सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक निरंतरता में निहित है।

Exclusivity of Nationhood

Emphasis on Hindu Identity: He emphasized that the Indian nation is fundamentally Hindu in character. Those who share this cultural and civilizational heritage, irrespective of their religious beliefs, are part of the Hindu nation.

राष्ट्रवाद की विशिष्टता: उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय राष्ट्र मौलिक रूप से हिंदू है। जो लोग इस सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत को साझा करते हैं, वे अपने धार्मिक विश्वासों की परवाह किए बिना, हिंदू राष्ट्र का हिस्सा हैं।

है।

Militant Nationalism

Advocacy for Armed Resistance: Savarkar supported the use of armed resistance against British colonial rule. He was involved in revolutionary activities and believed that violence was a legitimate means to achieve independence.

सशस्त्र राष्ट्रवाद: सावरकर ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध के उपयोग का समर्थन किया। वे क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल थे और मानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हिंसा एक वैध साधन है।

Social Reforms

Scholarly Minds

Abolition of Caste Discrimination: Despite his strong advocacy for Hindutva, Savarkar was also a proponent of social reforms. He opposed caste discrimination and promoted social equality within the Hindu community.

सामाजिक सुधार: जातिगत भेदभाव का उन्मूलन: हिंदुत्व की अपनी मजबूत वकालत के बावजूद, सावरकर सामाजिक सुधारों के भी पक्षधर थे। उन्होंने जातिगत भेदभाव का विरोध किया और हिंदू समुदाय के भीतर सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया।

TOPIC 3

Explain Mohammad Iqbal's ideas on nationalism and his contribution to tha Muslim thought.

Mohammad Iqbal's Ideas on Nationalism:

Critique of Western Nationalism:

Iqbal criticized Western nationalism, arguing that it often led to divisiveness and conflict among people. He believed that Western nationalism was based on racial and territorial boundaries which were artificial and contrary to the universal spirit of Islam.

इकबाल ने पश्चिमी राष्ट्रवाद की आलोचना की, यह तर्क देते हुए कि यह अक्सर लोगों के बीच विभाजन और संघर्ष की ओर ले जाता है। उनका मानना था कि पश्चिमी राष्ट्रवाद नस्लीय और क्षेत्रीय सीमाओं पर आधारित है, जो इस्लाम की सार्वभौमिक भावना के विपरीत थे।

Islamic Unity:

Iqbal advocated for a sense of unity among Muslims, transcending national boundaries. He envisioned a united Muslim community, or Ummah, that would collaborate based on shared religious and cultural values rather than territorial nationalism.

Scholarly Minds

इकबाल ने मुसलमानों के बीच एकता की भावना की वकालत की, जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे हो। उन्होंने एक एकजुट मुस्लिम समुदाय, या उम्मा की कल्पना की, जो भौगोलिक राष्ट्रवाद के बजाय साझा धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर सहयोग करेगा।

Role of Religion in Politics:

Iqbal emphasized the importance of religion in politics, advocating that political systems should be infused with Islamic values to ensure ethical governance. He believed that secular politics often led to moral decay.

इकबाल ने राजनीति में धर्म के महत्व पर जोर दिया, यह तर्क देते हुए कि राजनीतिक प्रणालियों में नैतिक शासन सुनिश्चित करने के लिए इस्लामी मूल्यों का समावेश होना चाहिए। उनका मानना था कि धर्मनिरपेक्ष राजनीति अक्सर नैतिक पतन की ओर ले जाती है।

Contribution to Muslim Thought:

Reconstruction of Religious Thought:

Iqbal's seminal work "The Reconstruction of Religious Thought in Islam" explored how Islamic philosophy and principles could be adapted to the modern age. He argued for a dynamic interpretation of Islam that could respond to contemporary challenges.

इकबाल का महत्वपूर्ण कार्य "द रिकंस्ट्रक्शन ऑफ़ रिलीजियस थॉट इन इस्लाम" इस बात की खोज करता है कि इस्लामी दर्शन और सिद्धांतों को आधुनिक युग में कैसे अपनाया जा सकता है। उन्होंने इस्लाम की एक गतिशील व्याख्या के पक्ष में तर्क दिया जो समकालीन चुनौतियों का जवाब दे सके।

Scholarly Minds

Emphasis on Ijtihad:

Iqbal emphasized the concept of Ijtihad (independent reasoning) in Islamic jurisprudence. He believed that Muslims should engage in continuous intellectual effort to reinterpret Islamic teachings to address modern issues.

इकबाल ने इस्लामी न्यायशास्त्र में इज्तिहाद (स्वतंत्र तर्क) की अवधारणा पर जोर दिया। उनका मानना था कि मुसलमानों को आधुनिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए इस्लामी शिक्षाओं की पुनर्व्याख्या के लिए निरंतर बौद्धिक प्रयास करने चाहिए।

Promotion of Selfhood (Khudi):

Iqbal introduced the concept of Khudi, or selfhood, emphasizing self-awareness, self-respect, and self-empowerment. He believed that realizing one's true potential was crucial for both individual and collective progress.

इकबाल ने खुदी, या आत्मता की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-सम्मान और आत्म-सशक्तिकरण पर जोर दिया गया। उनका मानना था कि अपनी वास्तविक क्षमता को समझना व्यक्तिगत और सामूहिक प्रगति दोनों के लिए महत्वपूर्ण था।

Vision for Pakistan:

Iqbal's ideas significantly influenced the creation of Pakistan. He envisioned a separate Muslim state in the Indian subcontinent where Muslims could practice their religion freely and develop a society based on Islamic values.

इकबाल के विचारों ने पाकिस्तान के निर्माण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में एक अलग मुस्लिम राज्य की कल्पना

Scholarly Minds

की, जहां मुसलमान स्वतंत्र रूप से अपना धर्म का पालन कर सकें और इस्लामी मूल्यों पर आधारित समाज का विकास कर सकें।

Scholarly Minds